४. मन
(पूरक पठन)

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :
(१) लिखिए :
निम्नलिखित हाइकु द्वारा मिलने वाला संदेश (उत्तर :)

करते जाओ पाने की मत सोचो जीवन सारा ।	**भीतरी कुंठा नयनों के द्वार से आई बाहर।**
हमें पूरा जीवन काम करते रहना चाहिए। यह नहीं सोचते रहना चाहिए कि हमें क्या प्राप्त होगा।	जब नेत्रों से अश्रु बहते हैं तो यह मानना चाहिए कि मन की कुंठा नयन रूपी द्वार से बाहर आ रही है।

(२) कृति पूर्ण कीजिए: (उत्तर :)
हाइकु में प्रयुक्त महीना और उसकी ऋतु
(१) फागुन
(२) बसंत

(३) उत्तर लिखिए : (उत्तर :)
(१.) मँझधार में डोले **- जीवन नैया**
(२.) छिपे हुए **- सीतारे**
(३.) धुल गए **- विषाद**
(४.) अमर हुए **- आकाश**

(४) निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए :
(१) चलती साथ
पटरियाँ रेल की
फिर भी मौन।
उत्तर : रेल की पटरियाँ अनंत काल से साथ चल रही हैं, परंतु वे सदा मौन रहती हैं। एक-दूसरे से कभी बात नहीं करतीं।

(२) काँटों के बीच
खिलखिलाता फूल
देता प्रेरणा।
उत्तर : गुलाब का फूल काँटों के बीच भी हँसता है, खिलखिलाता है। वह हमें हर पल प्रेरणा देता है कि हमें परेशानियों से घबराए बिना अपना काम करते जाना है।